The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume2 | Issue 2 | June 2026
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में समकालीन शिक्षा के उद्देश्यों का दार्शनिक पुनर्पाठ

डॉ. बाबूराम मौर्य

नारायणपुरी कॉलोनी, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 19/06/2026

स्वीकृति तिथि: 26/06/2026

प्रकाशनतिथि: 30/06/2026

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा-दर्शन, समकालीन शिक्षा, ज्ञानमीमांसा, मूल्य-शिक्षा, समग्र शिक्षा, आत्मबोध।

सारांश

शिक्षा किसी समाज की ज्ञान-दृष्टि, मूल्य-व्यवस्था और मनुष्य संबंधी अवधारणा की अभिव्यक्ति होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को केवल सूचनाओं के संचय अथवा जीविकोपार्जन की तैयारी तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि इसे मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा आत्मिक विकास से जोड़कर देखा गया है। ज्ञान का उद्देश्य यहाँ जीवन को समझना, विवेक का विकास करना तथा व्यक्ति और समाज के मध्य उत्तरदायी संबंध स्थापित करना भी रहा है। दूसरी ओर, समकालीन शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता, रोजगारपरकता, नवाचार और वैश्विक आवश्यकताओं से गहरे रूप में संबद्ध है। इन दोनों दृष्टियों को परस्पर विरोधी मानने के स्थान पर उनके बीच सार्थक संवाद स्थापित करने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित शिक्षा संबंधी प्रमुख अवधारणाओं का दार्शनिक विश्लेषण करते हुए समकालीन शिक्षा के उद्देश्यों का पुनर्पाठ करना है। अध्ययन दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को किसी एकरूप और स्थिर संरचना के रूप में स्वीकार करने के बजाय उसकी बहुलता को ध्यान में रखा गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष उभरता है कि आत्मबोध, विवेक, नैतिकता, सह-अस्तित्व, लोककल्याण, ज्ञान की समग्रता तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व जैसे तत्त्व आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों को व्यापक बनाने में उपयोगी हो सकते हैं। किंतु इन अवधारणाओं की समकालीन स्वीकृति आलोचनात्मक परीक्षण, वैज्ञानिक दृष्टि, संवैधानिक मूल्यों, समानता और बहुलता के साथ ही सार्थक हो सकती है।

1. प्रस्तावना

शिक्षा का प्रश्न मूलतः इस प्रश्न से जुड़ा है कि मनुष्य और समाज किस प्रकार का जीवन मूल्यवान मानते हैं। यदि शिक्षा का लक्ष्य केवल रोजगार प्राप्त करना हो, तो उसकी संरचना मुख्यतः कौशल और व्यावसायिक दक्षता पर केंद्रित होगी। यदि शिक्षा का उद्देश्य स्वतंत्र चिंतन, नैतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यक्तित्व का विकास भी माना जाए, तो उसकी प्रकृति व्यापक हो जाती है। इस अर्थ में शिक्षा केवल संस्थागत प्रक्रिया नहीं, बल्कि मनुष्य और समाज के निर्माण से संबंधित दार्शनिक उपक्रम है।

भारतीय चिंतन में ज्ञान की अनेक धाराएँ विकसित हुईं। वैदिक-उपनिषदिक चिंतन, बौद्ध एवं जैन दर्शन, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत जैसी परंपराओं ने ज्ञान, सत्य, मनुष्य और जीवन के प्रयोजन को अलग-अलग दृष्टियों से समझने का प्रयास किया। अतः "भारतीय ज्ञान परंपरा" को एक समान विचारधारा मानना उचित नहीं होगा। इसकी विशेषता इसकी बहुलता, संवाद और अनेक स्तरों पर विकसित ज्ञान-चिंतन में दिखाई देती है।

वर्तमान भारतीय शिक्षा-व्यवस्था के संदर्भ में यह विमर्श विशेष महत्त्व रखता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में समग्र एवं बहुविषयक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, नैतिक तथा संवैधानिक मूल्यों और भारतीय परंपराओं से संबंध स्थापित करने पर बल देती है। नीति में शिक्षा को चरित्र-निर्माण, तार्किकता, करुणा और सार्थक रोजगार की तैयारी से भी जोड़ा गया है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के दार्शनिक तत्त्व समकालीन शिक्षा के उद्देश्यों को किस प्रकार अधिक मानवीय, समग्र और उत्तरदायी बनाने में योगदान दे सकते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

इक्कीसवीं शताब्दी की शिक्षा एक जटिल सामाजिक-तकनीकी वातावरण में कार्य कर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक, बदलते रोजगार, वैश्वीकरण और पर्यावरणीय संकट ने

शिक्षा के सामने नए प्रश्न उत्पन्न किए हैं। विद्यार्थी के लिए सूचना प्राप्त करना पहले की तुलना में अधिक सरल हुआ है; इसलिए शिक्षा की भूमिका केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रह सकती। यह अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है कि विद्यार्थी सूचना की सत्यता का परीक्षण करे, उसका विवेकपूर्ण उपयोग करे और ज्ञान के सामाजिक तथा नैतिक परिणामों को समझ सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी रटने और परीक्षा-केंद्रित अधिगम के स्थान पर वैचारिक समझ, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, सृजनात्मकता तथा अनुभवात्मक और बहुविषयक अधिगम पर बल देती है। इसके साथ नीति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक विवेक, संवैधानिक मूल्य, डिजिटल साक्षरता और पर्यावरणीय चेतना को भी आवश्यक क्षमताओं में सम्मिलित करती है।

ऐसी स्थिति में भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन केवल अतीत के गौरव की खोज के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा के आधारभूत प्रश्नों—ज्ञान क्या है, शिक्षित व्यक्ति किसे कहा जाए और शिक्षा का अंतिम प्रयोजन क्या हो—पर पुनर्विचार के साधन के रूप में किया जाना चाहिए।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित शिक्षा के दार्शनिक आधारों का विश्लेषण करना।
2. ज्ञान, आत्मबोध, नैतिकता, लोककल्याण तथा समग्र विकास की अवधारणाओं का शैक्षिक अर्थ स्पष्ट करना।
3. समकालीन शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों का दार्शनिक परीक्षण करना।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा-दृष्टि के बीच संवाद की संभावनाओं तथा सीमाओं को पहचानना।
5. ऐसी शैक्षिक दृष्टि की संभावना तलाशना जिसमें वैज्ञानिक चेतना, मानवीय मूल्य, संवैधानिक आदर्श और भारतीय बौद्धिक परंपराओं के उपयोगी तत्त्व परस्पर पूरक भूमिका निभा सकें।

4. अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन मूलतः दार्शनिक, गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें अवधारणात्मक विश्लेषण, व्याख्यात्मक अध्ययन तथा तुलनात्मक दार्शनिक पद्धति का प्रयोग किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित अवधारणाओं को उनके दार्शनिक संदर्भ में समझते हुए उनकी समकालीन शैक्षिक उपयोगिता का परीक्षण किया गया है।

अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधी दिशानिर्देश जैसे आधिकारिक दस्तावेज भी संदर्भ के रूप में उपयोग किए गए हैं। UGC के दिशानिर्देश भारतीय ज्ञान प्रणाली को विभिन्न अनुशासनों में पीढ़ियों से विकसित ज्ञान की व्यापक परंपरा के रूप में प्रस्तुत करते हैं और उच्च शिक्षा में उसके परिचय एवं समावेशन पर बल देते हैं।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा की अवधारणा

भारतीय दार्शनिक चिंतन में ज्ञान को अनेक स्तरों पर समझा गया है। उपनिषदिक परंपरा में ज्ञान आत्म और अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों की खोज करता है। न्याय परंपरा ज्ञान की प्रमाणिकता और युक्तिसंगत परीक्षण की समस्या को महत्त्व देती है, जबकि बौद्ध दर्शन अनुभव, अनित्यता, प्रतीत्यसमुत्पाद और प्रज्ञा जैसे विचारों के माध्यम से व्यक्ति को अपनी धारणाओं की आलोचनात्मक जाँच की ओर ले जाता है। जैन दर्शन का अनेकांतवाद किसी वस्तु अथवा सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता की ओर संकेत करता है।

इन विविधताओं से शिक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण संकेत मिलता है—ज्ञान को केवल तैयार निष्कर्षों के संग्रह के रूप में नहीं, बल्कि खोज, परीक्षण, संवाद और आत्मचिंतन की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। इस दृष्टिकोण में शिक्षक का कार्य मात्र सूचना हस्तांतरित करना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी में प्रश्न करने, समझने और विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना है।

भारतीय परंपरा में "विद्या" का संबंध जीवन के व्यापक विकास से भी जोड़ा गया है। इसलिए शिक्षा के बौद्धिक पक्ष को नैतिक आचरण और आत्मानुशासन से पूर्णतः अलग नहीं किया जा

सकता। आधुनिक संदर्भ में इसका अर्थ किसी विशिष्ट धार्मिक आस्था को शिक्षा पर आरोपित करना नहीं होना चाहिए; बल्कि सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, सहानुभूति, आत्मनियंत्रण और सामाजिक दायित्व जैसे सार्वभौमिक गुणों के विकास की संभावनाओं पर विचार करना है।

6. आत्मबोध और व्यक्तित्व का समग्र विकास

समकालीन शिक्षा की एक चुनौती यह है कि विद्यार्थी की सफलता को प्रायः अंक, प्रमाणपत्र और रोजगार जैसी उपलब्धियों के माध्यम से मापा जाता है। ये शिक्षा के वैध और आवश्यक पक्ष हैं, किंतु मनुष्य की संपूर्ण शैक्षिक उन्नति का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

भारतीय दार्शनिक परंपराओं में आत्मज्ञान अथवा आत्मबोध की अवधारणा विभिन्न अर्थों में उपस्थित है। आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में आत्मबोध को स्वयं की क्षमताओं, सीमाओं, प्रवृत्तियों, उत्तरदायित्वों और जीवन-लक्ष्यों के विवेकपूर्ण ज्ञान के रूप में पुनर्व्याख्यायित किया जा सकता है। ऐसी शिक्षा विद्यार्थी को यह समझने में सहायता करती है कि वह क्या जानता है, कैसे सोचता है, उसके निर्णय दूसरों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं और समाज में उसकी भूमिका क्या हो सकती है।

इस अर्थ में समग्र विकास शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक और नैतिक आयामों के संतुलित विकास की मांग करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी विद्यार्थियों की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और अकादमिक तथा गैर-अकादमिक दोनों क्षेत्रों में उनके समग्र विकास को मूलभूत सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करती है।

7. ज्ञान और नैतिकता का संबंध

आधुनिक विज्ञान और तकनीक ने मानव समाज को अभूतपूर्व क्षमताएँ प्रदान की हैं। किंतु ज्ञान का प्रयोग किस उद्देश्य के लिए किया जाए, यह प्रश्न स्वयं तकनीकी दक्षता हल नहीं कर सकती। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव-प्रौद्योगिकी, डिजिटल निगरानी तथा पर्यावरणीय संसाधनों के उपयोग से संबंधित समकालीन प्रश्न स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान के साथ नैतिक विवेक भी आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त एक उपयोगी अंतर्दृष्टि यह है कि ज्ञान और आचरण के बीच संबंध पर विचार किया जाना चाहिए। शिक्षा यदि विद्यार्थी को अत्यधिक कुशल बनाती है किंतु उसके भीतर सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक निर्णय की क्षमता विकसित नहीं करती, तो उसका उद्देश्य अधूरा रह सकता है।

इस संदर्भ में मूल्य-शिक्षा का अर्थ पूर्वनिर्धारित उपदेशों को याद करवाना नहीं, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों में नैतिक समस्याओं पर तर्क, संवाद और आत्मपरीक्षण की क्षमता विकसित करना होना चाहिए। NEP 2020 भी सहानुभूति, दूसरों के प्रति सम्मान, लोकतांत्रिक भावना, सेवा, स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व, बहुलता, समानता और न्याय जैसे मानवीय तथा संवैधानिक मूल्यों को शिक्षा के मूल सिद्धांतों में रखती है।

8. लोककल्याण, सह-अस्तित्व और शिक्षा

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति को समाज से जोड़ना है। व्यक्ति की उपलब्धियाँ तभी व्यापक अर्थ ग्रहण करती हैं जब उनमें सामाजिक जीवन के प्रति उत्तरदायित्व भी सम्मिलित हो। भारतीय चिंतन में लोककल्याण, परस्पर निर्भरता, सेवा और सह-अस्तित्व से संबंधित अनेक अवधारणाएँ मिलती हैं।

समकालीन संदर्भ में इन अवधारणाओं का पुनर्पाठ लोकतांत्रिक नागरिकता, सामाजिक न्याय, सामुदायिक सहभागिता और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के संदर्भ में किया जा सकता है। उच्च शिक्षा को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़ने के लिए सामुदायिक सहभागिता, पर्यावरणीय शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। NEP 2020 उच्च शिक्षा में community engagement, environmental education और value-based education को समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा का हिस्सा बनाने की बात करती है।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रेरित शिक्षा व्यक्ति-केंद्रित विकास और समाज-केंद्रित उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर सकती है।

Corresponding Author: drbrmaurya@gmail.com

9. शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध का पुनर्पाठ

भारतीय शिक्षा-चिंतन में शिक्षक का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। किंतु समकालीन लोकतांत्रिक शिक्षा में गुरु-शिष्य संबंध की पुनर्व्याख्या आवश्यक है। शिक्षक को अंतिम और निर्विवाद ज्ञान-स्रोत मानने के बजाय उसे संवादकर्ता, मार्गदर्शक तथा सह-अन्वेषक के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

डिजिटल युग में विद्यार्थी के पास ज्ञान के अनेक स्रोत उपलब्ध हैं। इसलिए शिक्षक की भूमिका सूचना देने से आगे बढ़कर स्रोतों की विश्वसनीयता पहचानने, प्रश्न निर्मित करने, तर्क की जाँच करने, संवाद की संस्कृति विकसित करने और ज्ञान के नैतिक उपयोग की समझ उत्पन्न करने की है।

भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ी सामग्री के अध्यापन के लिए भी शिक्षकों का प्रशिक्षण आवश्यक है। UGC के दिशा-निर्देश इस उद्देश्य से शिक्षकों को भारतीय ज्ञान प्रणालियों के दार्शनिक आधार और प्राथमिक ग्रंथों से परिचित कराने पर बल देते हैं।

10. समकालीन शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा: आलोचनात्मक दृष्टि

भारतीय ज्ञान परंपरा को समकालीन शिक्षा में सम्मिलित करते समय आलोचनात्मक दृष्टि अत्यंत आवश्यक है। किसी भी ऐतिहासिक परंपरा को केवल इसलिए स्वीकार नहीं किया जा सकता कि वह प्राचीन है। परंपरा में उपलब्ध ज्ञान का परीक्षण तर्क, प्रमाण, वर्तमान ज्ञान और मानवीय गरिमा के सिद्धांतों के आधार पर होना चाहिए।

इसी प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा को किसी एक ग्रंथ, भाषा, दर्शन अथवा समुदाय तक सीमित करना उसकी वास्तविक बहुलता को कम कर देगा। भारतीय बौद्धिक इतिहास में वैदिक और अवैदिक, आस्तिक और नास्तिक, बौद्ध, जैन तथा अनेक क्षेत्रीय और लोक-ज्ञान परंपराएँ रही हैं। इसलिए शैक्षिक पुनर्पाठ समावेशी होना चाहिए।

दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न समानता का है। ऐतिहासिक ज्ञान-व्यवस्थाओं की सामाजिक परिस्थितियाँ वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था से भिन्न थीं। अतः किसी प्राचीन शैक्षिक संरचना को यथावत वर्तमान में लागू करने के बजाय उसके विचारों का संविधानसम्मत और आलोचनात्मक पुनर्पाठ

आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा में समान अवसर, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विचार की स्वतंत्रता अपरिहार्य हैं।

इस प्रकार "भारतीयता" और "आधुनिकता" को विरोधी ध्रुवों के रूप में देखने की आवश्यकता नहीं है। अधिक सार्थक दृष्टिकोण वह होगा जिसमें परंपरा प्रश्नों और अंतर्दृष्टियों का स्रोत बने, जबकि उनकी समकालीन वैधता तर्क, प्रमाण, समानता और मानवीय गरिमा के आधार पर निर्धारित हो।

11. समकालीन शिक्षा के उद्देश्यों का प्रस्तावित पुनर्पाठ

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर शिक्षा के उद्देश्य को पाँच परस्पर संबद्ध आयामों में समझा जा सकता है।

प्रथम, ज्ञानात्मक विकास, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टि, तार्किकता, आलोचनात्मक चिंतन और ज्ञान की खोज शामिल हो। शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाओं का संग्रह करना नहीं, बल्कि विद्यार्थी में प्रश्न करने, विश्लेषण करने और नवीन ज्ञान के निर्माण की क्षमता विकसित करना होना चाहिए।

द्वितीय, आत्म-विकास, जिसमें आत्मबोध, आत्मानुशासन, सृजनात्मकता और भावात्मक परिपक्वता सम्मिलित हो। शिक्षा व्यक्ति को अपनी क्षमताओं, सीमाओं और जीवन के उद्देश्यों को समझने में सहायता प्रदान करे।

तृतीय, नैतिक विकास, जिसमें विवेक, सहानुभूति, सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व सम्मिलित हों। ज्ञान का वास्तविक मूल्य तभी है जब उसका उपयोग मानवीय कल्याण और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ किया जाए।

चतुर्थ, सामाजिक एवं लोकतांत्रिक विकास, जिसमें समानता, न्याय, बहुलता, संवैधानिक मूल्यों और सामुदायिक उत्तरदायित्व का बोध हो। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना होना चाहिए जो लोकतांत्रिक समाज में सक्रिय और जिम्मेदार भूमिका निभा सकें।

पाँचवाँ, जीवन एवं आजीविका की क्षमता, जिसमें तकनीकी दक्षता, व्यावसायिक कौशल, नवाचार और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप सीखते रहने की योग्यता सम्मिलित हो।

इन आयामों के बीच संतुलन स्थापित होने पर शिक्षा न तो केवल रोजगार का साधन रह जाती है और न केवल अमूर्त आध्यात्मिक चिंतन। वह व्यक्ति को जीविका अर्जित करने योग्य बनाने के साथ-साथ विवेकपूर्ण, स्वतंत्र, उत्तरदायी और संवेदनशील जीवन के लिए तैयार करने की प्रक्रिया बनती है।

इस प्रकार समकालीन शिक्षा का उद्देश्य केवल दक्ष मानव संसाधन तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना होना चाहिए जिसमें ज्ञान, विवेक, नैतिकता और सामाजिक चेतना का समन्वय हो।

12. निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में समकालीन शिक्षा के उद्देश्यों का पुनर्पाठ यह संकेत देता है कि शिक्षा के लक्ष्य को केवल ज्ञानार्जन, परीक्षा और रोजगार तक सीमित करना पर्याप्त नहीं है। शिक्षा मनुष्य की बौद्धिक क्षमताओं के साथ उसके नैतिक विवेक, आत्मबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और सह-अस्तित्व की चेतना का विकास भी कर सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा इस दिशा में उपयोगी दार्शनिक संसाधन उपलब्ध कराती है, किंतु उसका प्रयोग आलोचनात्मक और चयनात्मक होना चाहिए। अतीत का अनुकरण करने के स्थान पर उसकी अवधारणाओं का वर्तमान सामाजिक, वैज्ञानिक और संवैधानिक संदर्भ में पुनर्परीक्षण आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा का सार्थक शैक्षिक उपयोग तभी संभव है जब बहुलता, तर्क, प्रमाण, समानता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उसके अध्ययन का अभिन्न आधार बनाया जाए।

अतः समकालीन शिक्षा के लिए ऐसी संश्लेषित दृष्टि की आवश्यकता दिखाई देती है जो आधुनिक विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए ज्ञान के मानवीय और नैतिक प्रयोजन को विस्मृत न करे। शिक्षा का उद्देश्य केवल यह नहीं होना चाहिए कि विद्यार्थी "क्या जानता है", बल्कि यह भी कि वह ज्ञान को कैसे प्राप्त करता है, उसका परीक्षण कैसे

करता है, उसका उपयोग किस उद्देश्य से करता है और उस उपयोग के प्रति कितना उत्तरदायी है।

यही प्रश्न भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन शिक्षा के बीच सार्थक दार्शनिक संवाद की आधारभूमि बन सकता है।

संदर्भ सूची

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020). ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020***. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।

University Grants Commission. (2023). ***Guidelines for Training/Orientation of Faculty on Indian Knowledge System (IKS).*** New Delhi: UGC.

University Grants Commission. (2023). ***Guidelines for Incorporating Indian Knowledge in Higher Education Curricula.*** New Delhi: UGC.

University Grants Commission. (2023). ***Mulya Pravah 2.0: Inculcation of Human Values and Professional Ethics in Higher Education Institutions.*** New Delhi: UGC.

Radhakrishnan, S. ***Indian Philosophy.*** Oxford University Press.

Dasgupta, S. N. ***A History of Indian Philosophy.*** Cambridge University Press.

Hiriyanna, M. ***Outlines of Indian Philosophy.*** Motilal Banarsidass.

ईशादि नौ उपनिषद। गीता प्रेस, गोरखपुर।

श्रीमद्भगवद्गीता। विभिन्न प्रामाणिक संस्करण।